बेन का जादुई टेलिस्कोप

ब्रायन पेटन

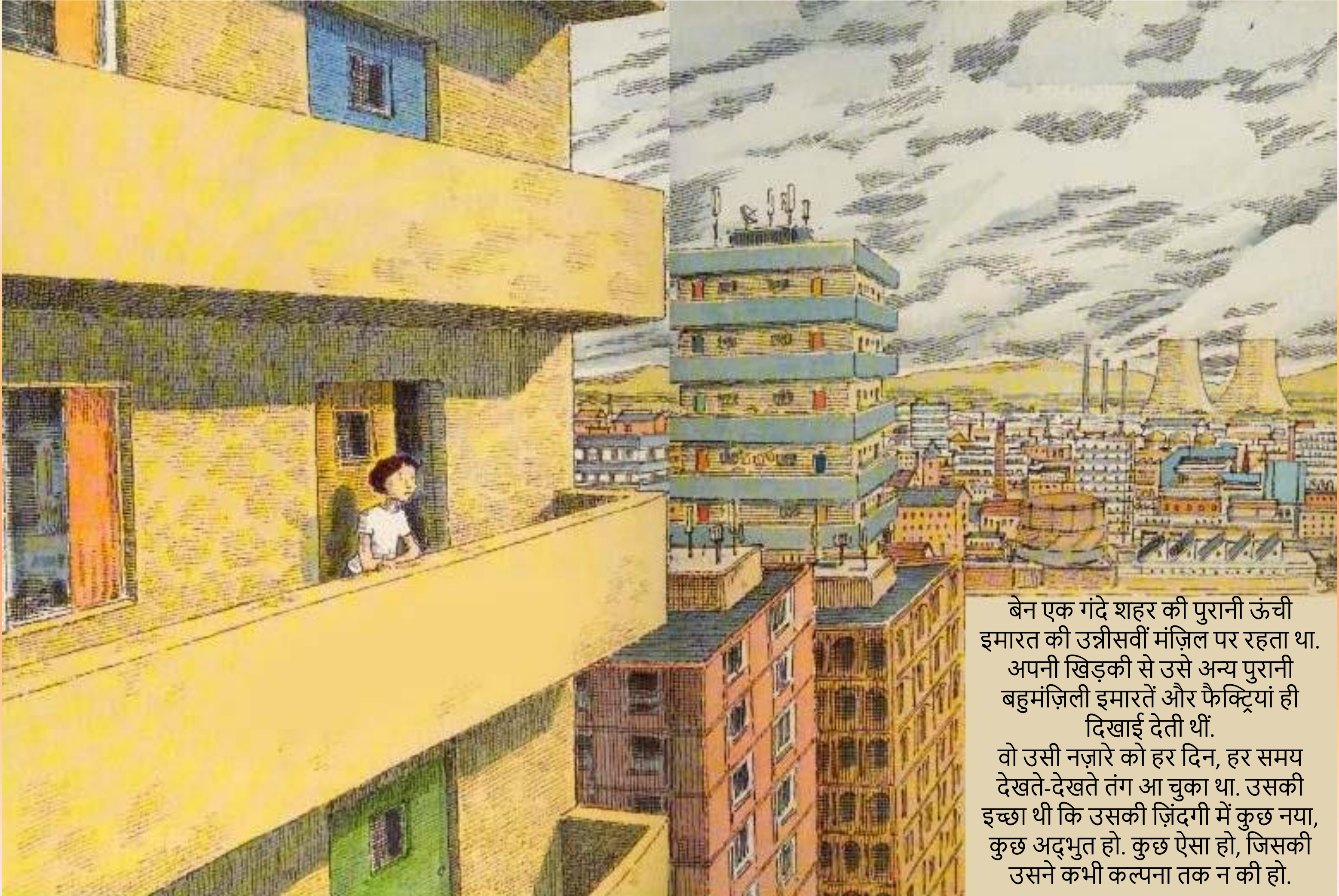

बेन एक गंदे शहर की पुरानी ऊंची इमारत की उन्नीसवीं मंज़िल पर रहता था. अपनी खिड़की से उसे अन्य पुरानी बहुमंज़िली इमारतें और फैक्ट्रियां ही दिखाई देती थीं.

वो उसी नज़ारे को हर दिन, हर समय देखते-देखते तंग आ चुका था. उसकी इच्छा थी कि उसकी ज़िंदगी में कुछ नया, कुछ अद्भुत हो. कुछ ऐसा हो, जिसकी उसने कभी कल्पना तक न की हो.

और क्योंकि उसने यह इच्छा
नवें दिन के नवें घंटे में और
जब वो नौवें साल में था
तब ज़ाहिर की थी, इसलिए
वाकई में कुछ अद्भुत घटा.

उसकी इमारत की नौवीं मंज़िल पर
तमाम कूड़ा-कचरा पड़ा था.
कबाड़ में उसे एक चांदी के रंग का
टेलिस्कोप मिला. टेलिस्कोप की नली
पर सूरज और चाँद के चित्र खुदे थे
और उनके बीच में एक खुली आँख थी.
बेन उस अजीब टेलिस्कोप को अपने
कमरे में ले गया और फिर उसने
खिड़की में से टेलिस्कोप से देखा.

ऊंची इमारतों के बीच उसे वो छोटा सा बाजार दिखाई दिया, जहाँ से माँ अक्सर सामान खरीदती थीं. इतना ही नहीं वो हर दुकान के प्लास्टिक कवर पर गिरी बारिश की बूंदे तक देख पाया.

उसे यकीन नहीं हुआ कि वो टेलिस्कोप इतना शक्तिशाली होगा.

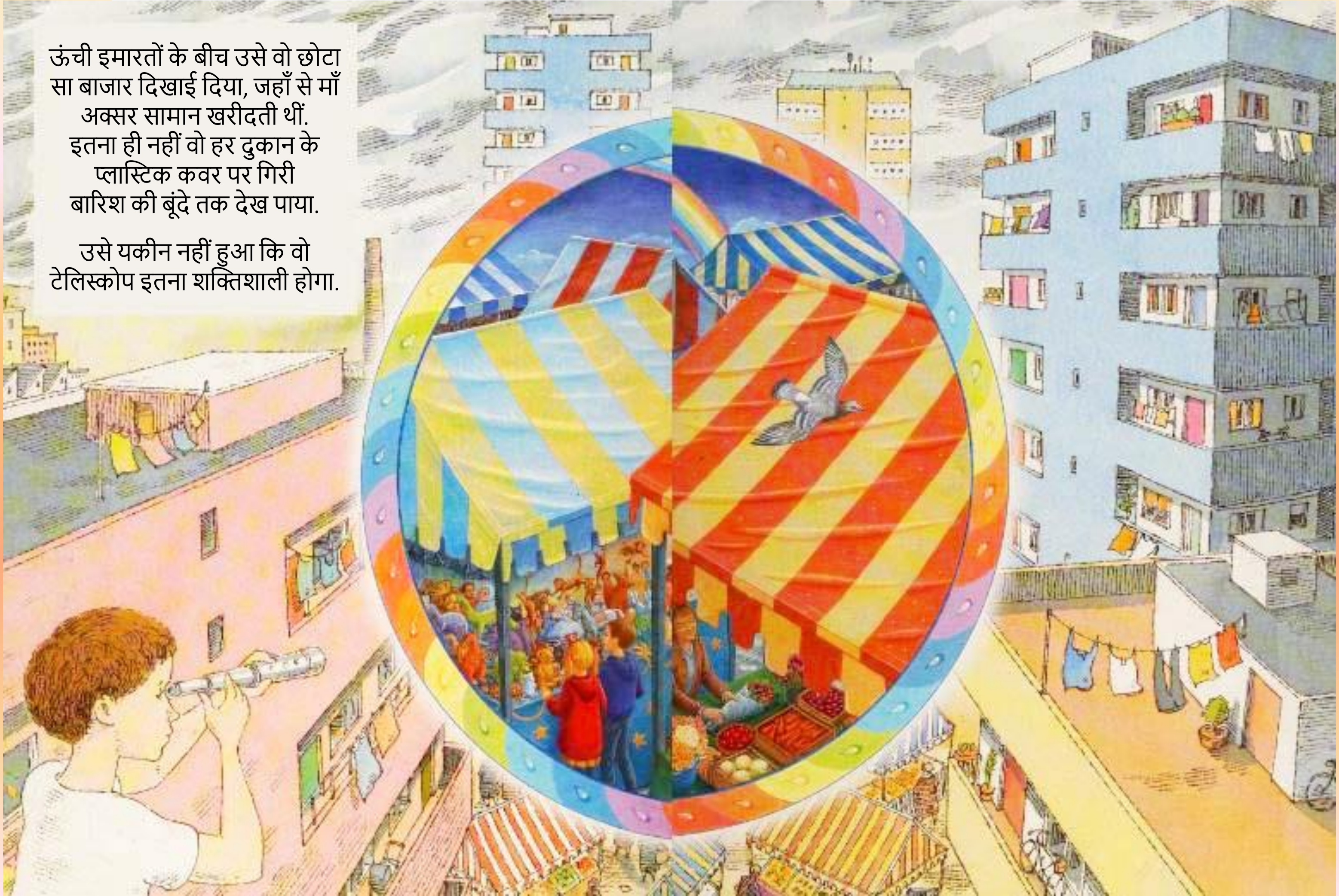

फल की दुकान पर सेब, आड़ू, और आलूबुखारे अद्भुत रंगों में चमक रहे थे. वो टेलिस्कोप से संतरों का खुरदुरापन देख सकता था. सेबों पर पड़े गड्ढे और दाग नक्शों जैसे दिख रहे थे.

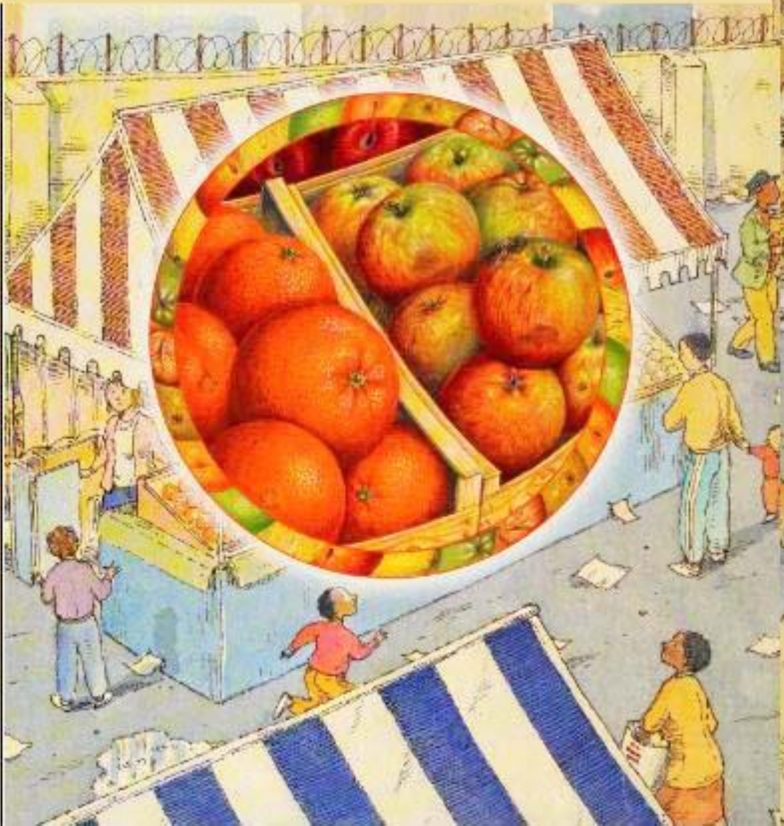

वहां पर एक भारतीय महिला की कपड़ों की दुकान थी. टेलिस्कोप से चकमीले कपड़ों के रंगीन धागे दिख रहे थे. एक दुकान स्टील के बर्तनों की थी. बेन ग्राहकों के चेहरों के प्रतिबिम्ब को स्टील के ग्लासों और बर्तनों में देख पा रहा था.

बेन ने अब अपने टेलिस्कोप को, शहर की दूसरी दिशा में मोड़ा. असल में वो वही देख रहा था जो वो रोज़ाना देखता था. पर अब उसे चीज़ें एकदम साफ़-स्पष्ट दिखाई दे रही थीं. उन्हें देख उसे बहुत आश्चर्य हुआ.

एक फैक्ट्री की दीवार के ऊपर उसने एक बिल्ली को अपने चोट लगे पंजे को चाटते हुए देखा.

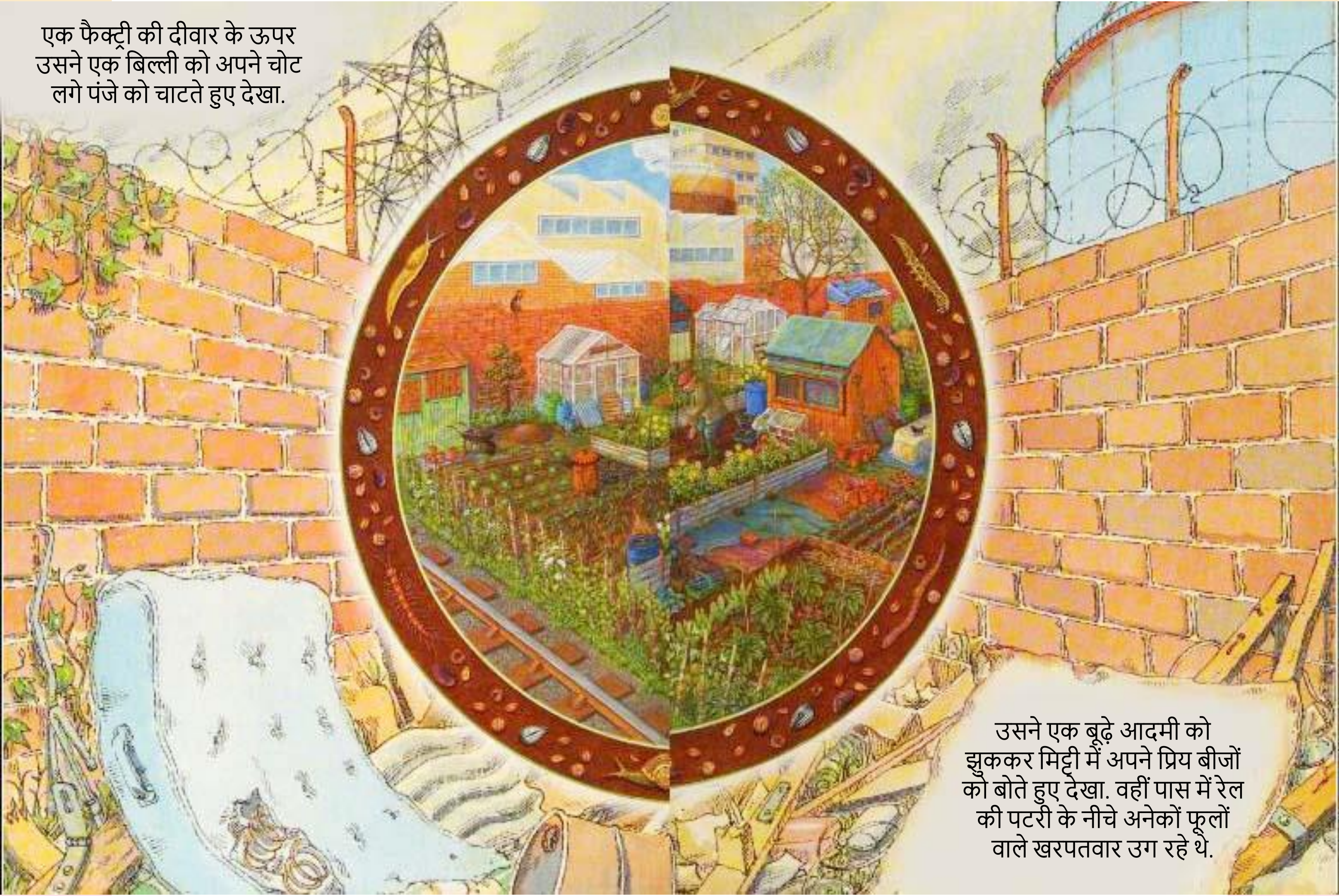

उसने एक बूढ़े आदमी को झुककर मिट्टी में अपने प्रिय बीजों को बोते हुए देखा. वहीं पास में रेल की पटरी के नीचे अनेकों फूलों वाले खरपतवार उग रहे थे.

उसने ताल के ऊपर एक ड्रैगनफ्लाई देखी
जिसके पंखों पर गज़ब की नक्काशी थी.
गाते समय जब रेन चिड़िया ने
अपना मुंह खोला तब बेन को
उसकी लाल जीभ दिखाई दी.

उसने मकड़ी के जाल में सूरज की
किरणों को थिरकते हुए देखा.

अपने टेलिस्कोप में से बेन ने एक
मे-फ्लाई को उड़ते हुए देखा.

बेन ने फिर टेलिस्कोप को एडजस्ट किया.
अब वो समुद्र के पार पहाड़ों पर
जमी चमकीली बर्फ देख सकता था.

उसे दूर समुद्र में तैरती एक नौका का लाल पाल,
एक रूमाल जितना बड़ा दिखा.

उसने व्हेल को, पानी का एक ऊंचा फव्वारा
हवा में फेंकते हुए देखा.

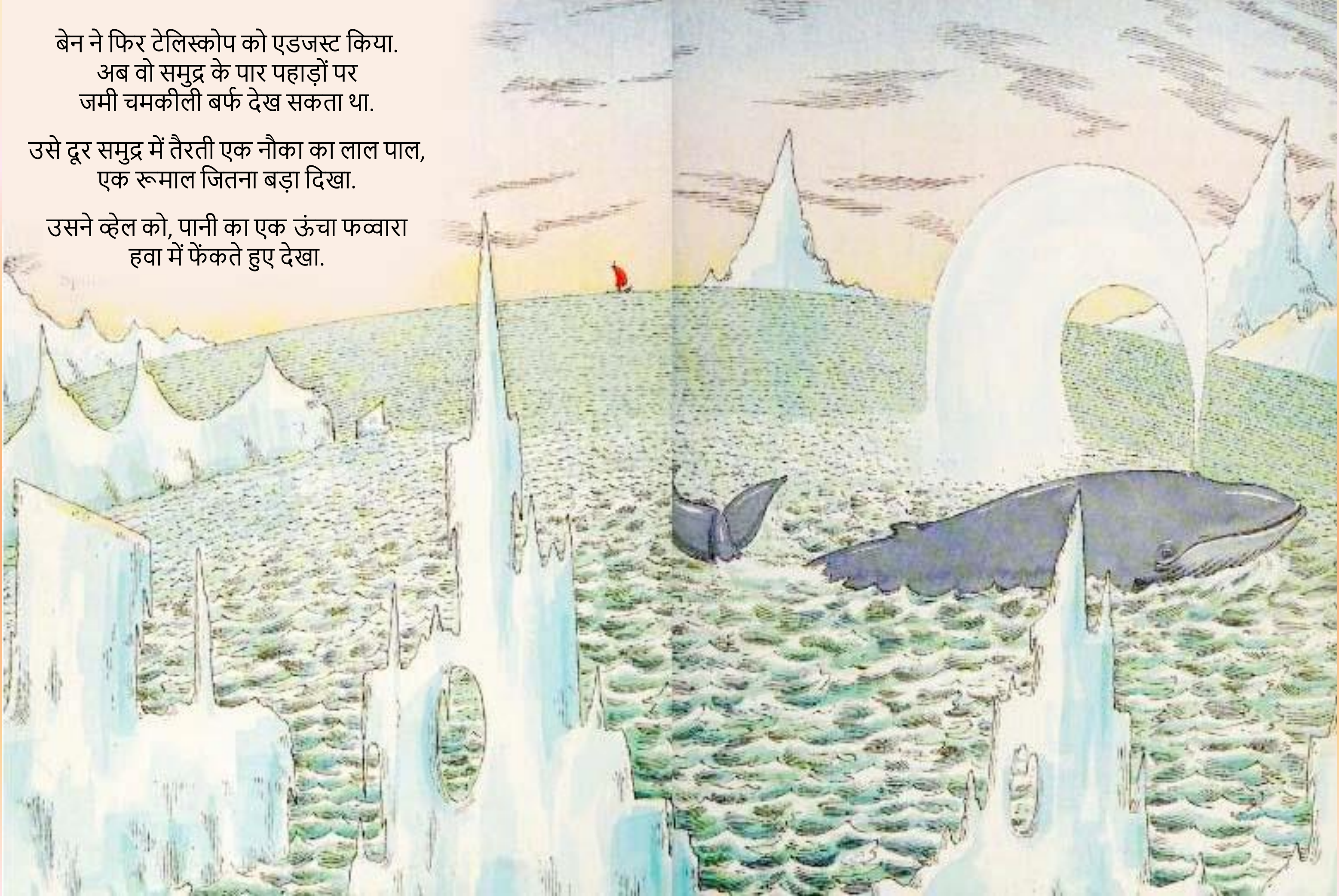

उसने गिरते हुए स्नो-फ्लेक्स देखे,
हरेक का कुछ अलग आकार था.
और बर्फ के दो ऊंचे खंडों के बीच
उसने एक दोहरे इंद्रधनुष को देखा.

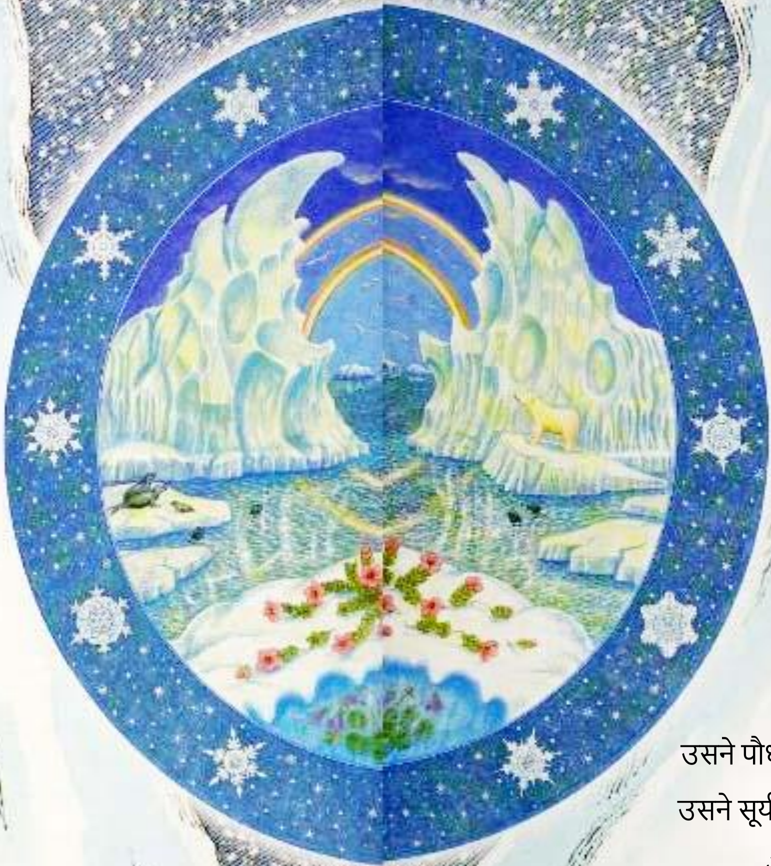

उसने पौधों को, सूरज की गर्मी सोखते देखा.
उसने सूर्य के प्रकाश को, स्नो पर गिरते देखा.
और जमी हुई बर्फ के नीचे
उसने सर्दियों के फूलों को खिलते हुए देखा.

एक बार बेन ने फिर से
टेलिस्कोप को एडजस्ट किया.
अब वो वापिस फिर से अपने शहर में था.
वहाँ सूरज ढल रहा था
और अँधेरा छाने वाला था.

उसने उल्लू की आँख में सूरज के किरण देखी.
वो शायद दिन की आखिरी किरण थी.
उसने खेत में एक ऊदबिलाव को
अपने बिल में तेज़ी से भागते हुए देखा.

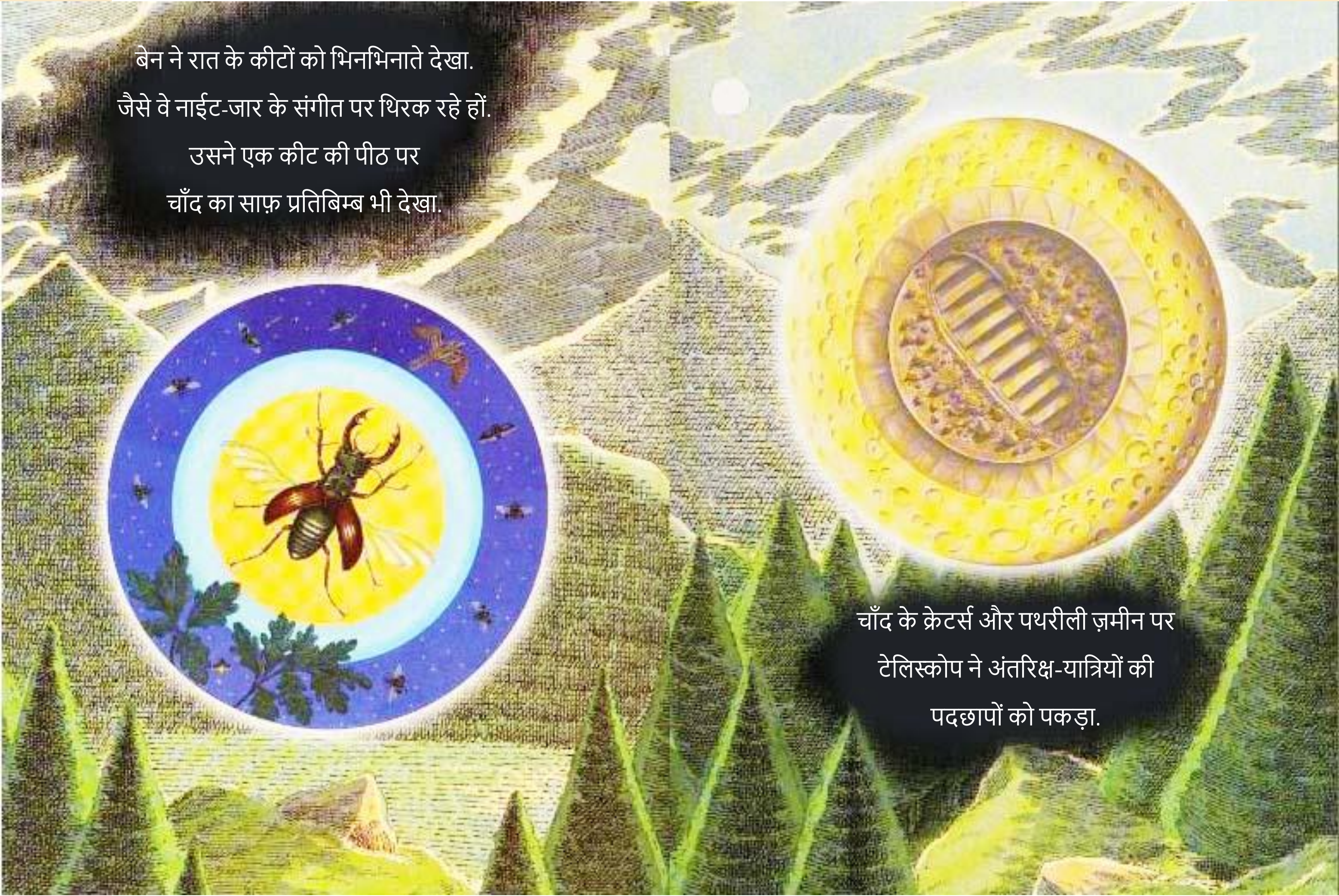
बेन ने रात के कीटों को भिनभिनाते देखा.
जैसे वे नाईट-जार के संगीत पर थिरक रहे हों.
उसने एक कीट की पीठ पर
चाँद का साफ़ प्रतिबिम्ब भी देखा.
चाँद के क्रेटर्स और पथरीली ज़मीन पर
टेलिस्कोप ने अंतरिक्ष-यात्रियों की
पदछापों को पकड़ा.

बेन ने फिर टेलिस्कोप में से देखा.
बाकी ग्रह, पृथ्वी के ऊपर चक्कर लगा रहे थे.
उसने उन असंख्यों टिमटिमाते तारों को देखा
जिनको रात ने ही जन्म दिया था.

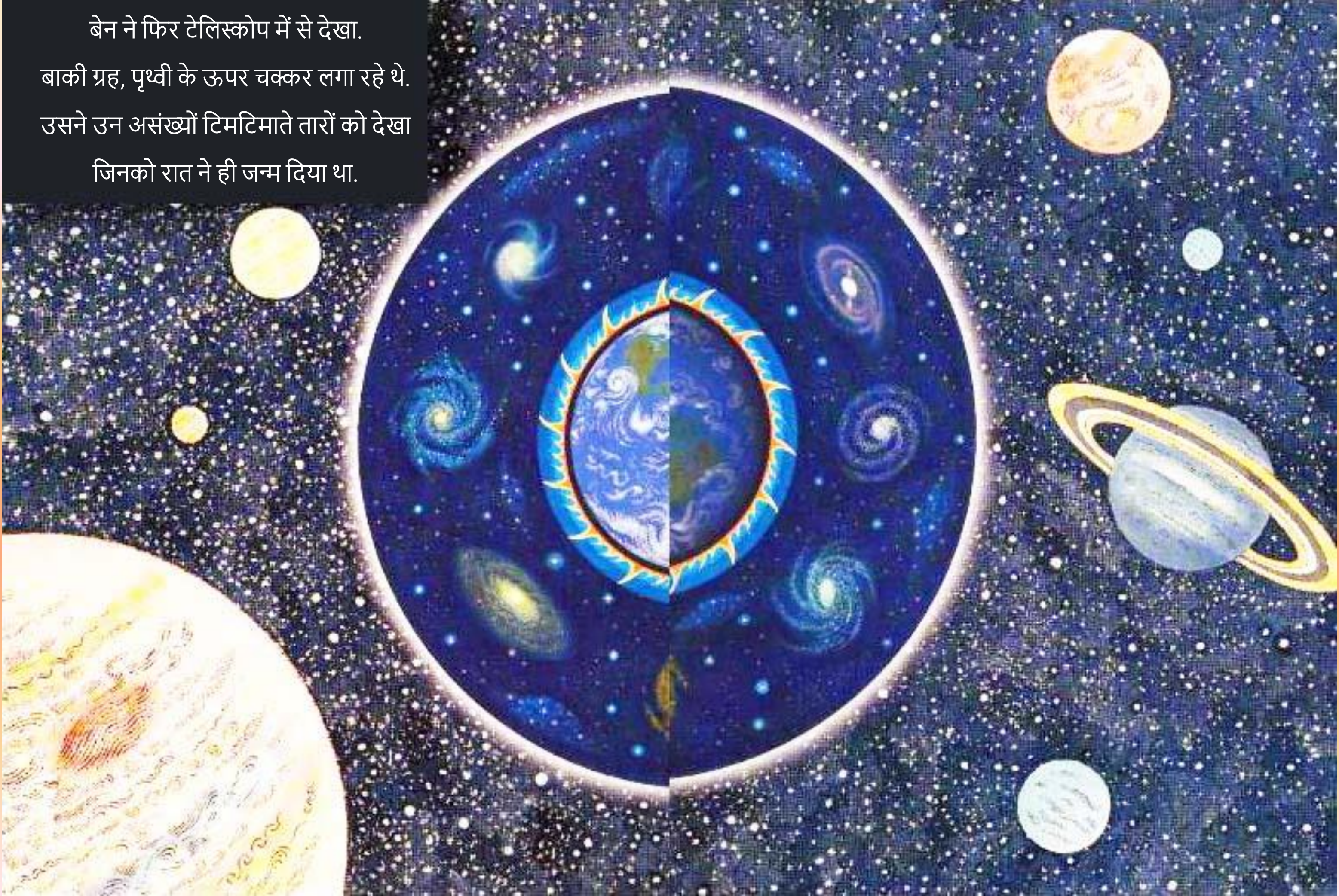

बेन अब तक थक चुका था
और उसका दिमाग जादुई चीज़ों से
पूरी तरह भर गया था.
उसने टेलिस्कोप को संभाल कर,
अपनी दराज़ में रख दिया
और फिर वो बाहर देखने लगा.
ऊंची बिल्डिंग्स और फैक्ट्रियां अभी भी थीं
पर अब उसे पता था कि उनके आगे भी
खोजने के लिए एक नई दुनिया थी.

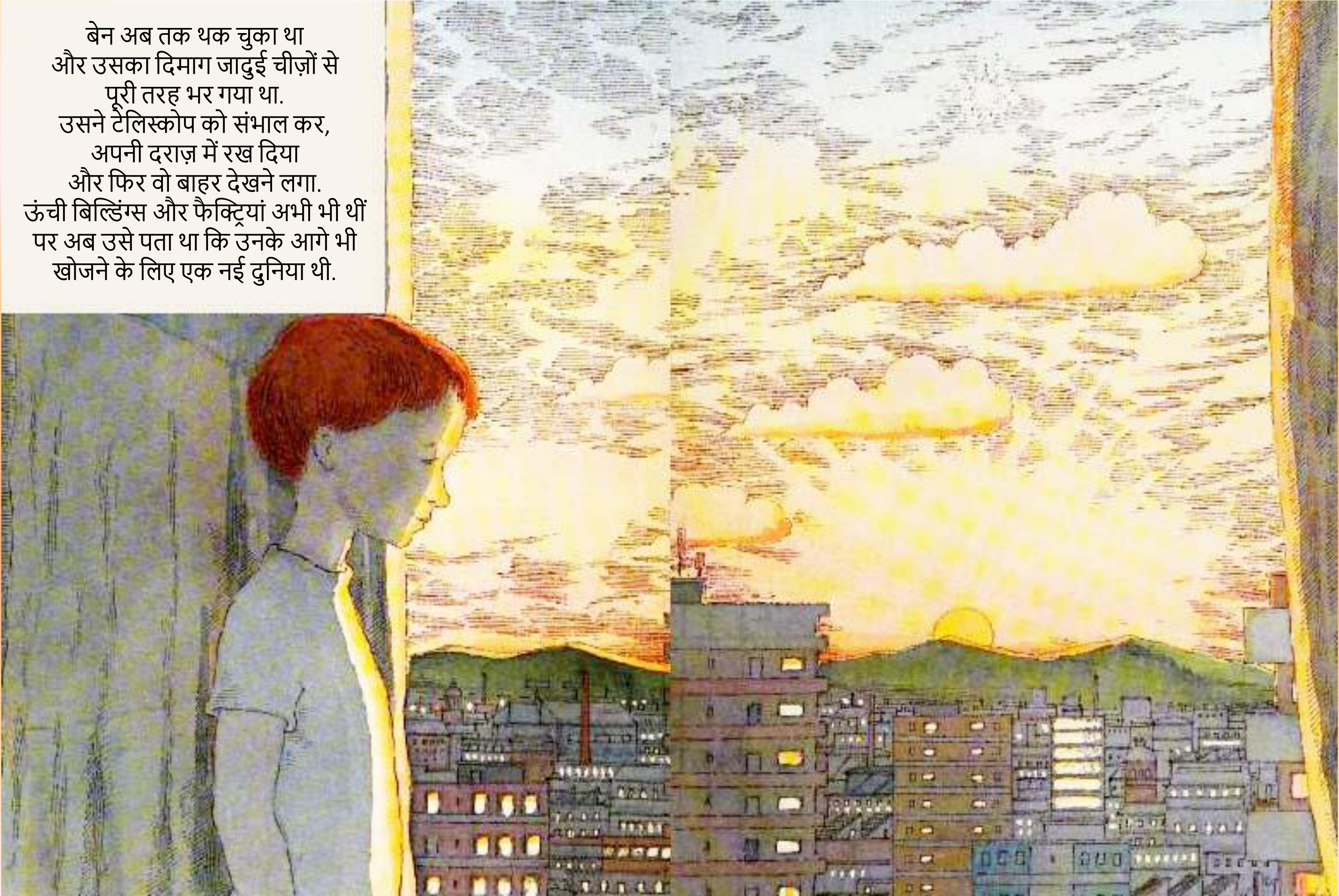

बेन अब दुनिया को

अपने पुराने तरीके से फिर कभी नहीं देखेगा.

समाप्त